विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 37 : नई दिल्ली : 7-13 दिसम्बर 2018

अहिंसा यात्रा प्रणेता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करते हुए सानंद सुखसातापूर्वक विहरण कर रहे हैं। इस क्षेत्र की अन्य जैन एवं जैनेतर जनता में भी अहिंसा यात्रा का प्रभाव दिखाई दे रहा है। भाषायी भिन्नता के बावजूद आचार्यप्रवर के प्रति स्थानीय लोगों की भक्ति का भाव उनकी मुखाकृति से स्पष्टतया ज्ञात हो जाता है। करीब पचास वर्षों बाद जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यप्रवर का समागमन तमिलनाडु के इन क्षेत्रों के तेरापंथी श्रद्धालुओं की भक्ति को और अधिक पुष्ट बनाने वाला सिद्ध हो रहा है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार पूज्यप्रवर दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में पांडिचेरी में पधारेंगे। निकटस्थ कडलूर में आचार्यप्रवर नववर्ष का मंगलपाठ सुनाएंगे तथा फरवरी के प्रथम सप्ताह में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में तिरुपुर में वर्धमान महोत्सव का समायोजन होगा। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ८ फरवरी को कोयम्बत्तूर में १५५वें मर्यादा महोत्सव हेतु भव्य पावन प्रवेश करेंगे।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

सुफल और प्रभावक चेन्नई चतुर्मास सम्पन्न कर माधावरम से ससंघ प्रस्थित हुए गुरुवरम्

२४ नवम्बर। आस्था का अर्घ्य अर्पित करते हजारों मस्तक, कृतज्ञ भावों से अभिभूत हजारों हृदय, आंसुओं से छलाछल हजारों आंखें, रुंधे हुए हजारों कंठ और वंदन की मुद्रा में परस्पर जुड़े हुए हजारों हाथ हजारों किलोमीटर प्रलम्ब यात्रा के लिए सन्नद्ध और फौलादी संकल्पों से सराबोर ज्योतिचरण के दो कोमल चरणकमलों में अपने मंगलभाव अर्पित कर रहे थे। चेन्नई महानगर के माधावरम में स्थित भव्य 'आचार्य महाश्रमण जैन तेरापंथ विद्यालय' और उसके आसपास का यह दृश्य किसी भी व्यक्ति को भावविभोर बनाने में समर्थ था। चार माह तक महातपस्वी महापुरुष के पावन आभावलय में अध्यात्म की धारा में गोते लगाने वाले चेन्नईवासियों का मन समय की गति को वहीं रोकने के लिए कसमसा रहा था, किन्तु न समय की गति को रोकना उनके वश में था और न ही निर्लिप्त, निर्मोही व निर्विकारी अपने आराध्य को। टिक्-टिक् कर बढ़ रही घड़ी की सुइयों के साथ श्रद्धालु जनता के धड़कन की धक्-धक् भी बढ़ती जा रही थी और बढ़ता जा रहा था कपोलों पर टप-टप ढुलकते आंसुओं का वेग।

मंद मोहक मुस्कान के साथ वात्सल्य और आशीर्वाद की वर्षा के द्वारा चेन्नईवासियों को मोहित करने वाले मोहन (आचार्यप्रवर) स्वयं निर्मोही रहकर बढ़ रहे थे जन-जन के मोहावरण को दूर करने के लिए। उमड़े हुए जनसैलाब, उसके भीतर से उठते मंगलमय भावों के पारावार और श्रद्धालुओं के नयनों से प्रस्फुरित होते अश्रु बिन्दुओं के सिन्धु को देखकर यह अनायास अनुमानित हो रहा था कि एक क्षीर सागर ने सागर किनारे रहने वाले श्रद्धालुओं की आधी सदी की प्यास बुझाई भी है तो बढ़ाई भी है। आर्हत वाङ्मय के उद्गाता ने करीब चार मास तक एक स्थान पर रहकर स्थानांग सूत्रों के रहस्यों को जनता के बीच बांटा और आज वे आर्हत वाङ्मय के एक सूक्त 'विहारचरिया इसिणं पसत्था' को चरितार्थ करते हुए उस स्थान को छोड़कर पुनः विहरणमान बन रहे थे।

'आचार्य महाश्रमण जैन तेरापंथ विद्यालय' से महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण के विहार से पूर्व संपूर्ण परिसर जनाकीर्ण बन गया। यों तो सैंकड़ों चेन्नईवासी चार मास तक चतुर्मास स्थल परिसर और उसके

आसपास डेरा डाले रहे, किन्तु ब्रह्ममुहूर्त और उसके आसपास 'महाश्रमण विहार' में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की संख्या भी हजारों में थी। यही कारण था कि विहार के संदर्भ में पूज्यप्रवर के मुखारविंद से उच्चरित होने वाले मंगलपाठ के निर्धारित समय से पूर्व ही नमस्कार सभागार (जहां अक्सर गुरुवन्दना, प्रतिक्रमण, अर्हतवन्दना, चरणस्पर्श आदि उपक्रम समायोजित होते थे) का परिपार्श्ववर्ती चौक तथा पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल 'आचार्य महाश्रमण सभागार' (जहां पूज्यप्रवर प्रायः दिन-रात प्रवास करते थे) श्रद्धालुओं से भर गया। सचमुच ऐसा लग रहा था कि चार मास से महाश्रमणमय बने हुए इस परिसर का चप्पा-चप्पा महातपस्वी महाश्रमण की गौरवगाथा गा रहा है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने करीब आठ बजे से विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा--'यह स्थान, जहां चतुर्मास हुआ है, बताया गया कि यहां बाद में विद्यालय के संचालन की योजना है। विद्यालय में विद्या के साथ आचार का भी योग अच्छे रूप में रहे। जैन शासन के नायक अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य, प्रथम गुरु, परम श्रद्धेय, परम पूज्य आचार्य भिक्षु हुए। उनकी परंपरा में अतीत में कुल दस आचार्य हुए। नवम अनुशास्ता परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और दशमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को हमने प्रत्यक्ष देखा था। गुरुदेव तुलसी स्वयं चेन्नई (मद्रास) में पधारे थे और चतुर्मास भी किया था। उनका सश्रद्धा स्मरण करता हूं।' पूज्यप्रवर ने भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी की स्तवना में पृथक्-पृथक् गीतों का आंशिक संगान किया।

पूज्यप्रवर ने तेरापंथ वेलफेयर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री देवराज आच्छा और व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री धर्मचंद लूंकड़ को याद कर मकान, पट्ट आदि सौंपी। तदुपरान्त विशाल जनमेदिनी को मंगलपाठ सुनाया।

घड़ी ने ज्यों ही ८.१५ बजने की सूचना दी, अहिंसा यात्रा प्रणेता शांतिदूत महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण ने 'आचार्य महाश्रमण जैन तेरापंथ विद्यालय' के पूर्वी द्वार से पावन प्रस्थान कर दिया। आचार्यप्रवर के पदचिन्हों का अनुगमन करता हुआ साधु समुदाय भी विद्यालय से प्रस्थित हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने अपने प्रवास स्थल के पूर्वी द्वार से प्रस्थान किया। हजारों-हजारों श्रद्धालुओं के सैलाब के बीच गूंज उठा बुलंद जयनाद--'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण।'

चार मास में आचार्यप्रवर और अहिंसा यात्रा से सुपरिचित बन चुकी माधावरम की जैनेतर जनता पूज्यप्रवर के प्रति करबद्ध नतसिर प्रणति अर्पित कर रही थी तो वाहनों के माध्यम से यात्रायित दूसरे क्षेत्रों के लोगों की दृष्टि दूर-दूर तक फैले जनता के सैलाब के बीच अहिंसा यात्रा के महानायक को खोज रही थी। ज्योंही एक व्यक्ति अपनी इस खोज में सफलता प्राप्त कर रहा था, वह अपने पड़ोस में बैठे दूसरे व्यक्ति को संकेत कर आचार्यप्रवर के विषय में बता रहा था। आचार्यप्रवर भव्य जुलूस के साथ 'चेन्नई श्रीकाकुलम् हाइवे' पर पधारे। पूज्यप्रवर के पीछे-पीछे चलने वाले हजारों लोगों के कारण राजपथ के एक ओर का पूरा हिस्सा लम्बी दूरी तक अवरुद्ध बना हुआ था। इस कारण वाहनों की लंबी कतार लग गई। प्रशासन और कार्यकर्ताओं ने ध्यान देकर उन वाहनों के अपने गंतव्य की ओर बढ़ने की व्यवस्था बनाई।

राजमार्ग पर कुछ दूर चलने के उपरान्त आचार्यप्रवर ने कुछ आगे गतिमान महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी को रुकने का निर्देश प्रदान किया। साध्वीप्रमुखाजी जहां रुकीं, वहां आचार्यप्रवर पधारे तो साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर को वंदन किया। आचार्यप्रवर के निर्देश पर साध्वीप्रमुखाजी ने मंगलपाठ का उच्चारण किया। पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित करते हुए उन्होंने कहा--'पूज्यप्रवर का शरीर निरामय रहे, यात्रा सुफल, मंगलमय हो।' आचार्यप्रवर उनके मंगल भावों को स्वीकार कर उन्हें पुनः आगे चलने का निर्देश प्रदान किया।

पूज्यप्रवर करीब ६.८ किमी की दूरी तय कर रेडहिल्स के निकटस्थ 'रमेश राइस मिल' में पधारे। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम यहीं समायोजित हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के मन में जब अस्थिरता आ जाती है तो थोड़ा कठिन कार्य भी करना मुश्किल होता है और मनुष्य में मनोबल, आत्मबल होता है तो कठिन कार्य को भी वह प्रसन्न मन से कर लेता है। आदमी के जीवन में उसकी आस्था, उसके दृष्टिकोण, आकर्षण, मनोबल और साहस का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। शरीरबल का भी मूल्य है और मनोबल का भी मूल्य है।'

आचार्यप्रवर ने मेघकुमार के घटना प्रसंग को सुनाकर कहा--'अनुकंपा एक ऐसा तत्त्व है, जो आत्मा को निर्मल बनाता है और मोक्ष की ओर भी आगे बढ़ा सकता है। अनुकंपा की चेतना जागती है तो आदमी अहिंसा की साधना कर सकता है। दया के बिना आदमी कितने-कितने पापों में प्रवृत्त हो सकता है। जो व्यवहार अपने लिए प्रिय न हो, वह व्यवहार दूसरे के साथ भी नहीं करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'हम अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। चेन्नई के माधावरम में चतुर्मास सम्पन्न हुआ। चतुर्मास में भी अहिंसा यात्रा तो थी, किन्तु वह स्थिर रूप में थी। अब यह पुनः गतिमान हो गई है। चतुर्मासकाल अयात्रा का होता है और शेषकाल यात्रा का भी हो जाता है।'

पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित रेडहिल्स के जैन एवं जैनेतर लोगों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार कराए। रेडहिल्स जैन संघ की ओर से श्री मनोज भण्डारी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अभातेयुप के सहमंत्री श्री रमेश डागा ने अपने निवास स्थान में पूज्यप्रवर के प्रवास के संदर्भ में अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। डागा परिवार की महिलाओं ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर का स्वागत किया। बालिका दीक्षिता डागा, श्री गणपत डागा, श्रीमती संगीता डागा और डॉ. सुष्मिता डागा अपने उल्लसित भावों को अभिव्यक्त किया। डागा परिवार के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा अपने आराध्य का स्वागत किया।

कार्यक्रम में अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं के दायित्व हस्तांतरण का उपक्रम रहा। इस संदर्भ में चेन्नई चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री धर्मचंद लूंकड़ तथा कोयम्बत्तूर मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री विनोद लूणिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। परम पूज्य आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर जैन ध्वज के माध्यम से चेन्नई के कार्यकर्ताओं ने कोयम्बत्तूर के कार्यकर्ताओं को यात्रा व्यवस्थाओं का दायित्व सौंपा। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम के दौरान श्री रमेश, जितेन्द्र आंचलिया परिवार ने अहिंसा यात्रा में उपयोगार्थ एक वाहन महासभा को सौंपा। कार्यक्रम के पश्चात् आचार्यप्रवर ने वाहन के निकट आंचलिया परिवार और महासभा के कार्यकर्ताओं को मंगलपाठ सुनाया।

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यप्रवर प्रवचन स्थल से रेडहिल्स की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग के समीप स्थित 'पुजल झील' के विषय में बताया गया कि चेन्नई महानगर में पेयजल की आपूर्ति इसी झील से की जाती है। इस झील का क्षेत्रफल ३३००० मिलियन फुट बताया गया। पूज्यप्रवर रेडहिल्स में स्थित एन. मदनलाल राजेश रमेश डागा परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। चेन्नई चतुर्मास के बाद पूज्यप्रवर के प्रथम दिन के प्रवास का सौभाग्य प्राप्त कर डागा परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

अम्बत्तूर में पावन पदार्पण

२५ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः रेडहिल्स से अम्बत्तूर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में अनेक लोगों ने अपने-अपने घर, व्यावसायिक प्रतिष्ठान के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। आचार्यप्रवर लगभग १०.१ किमी का विहार कर अम्बत्तूर स्थित सेतु भास्कर मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य के पदार्पण और एकदिवसीय प्रवास से अम्बत्तूर के श्रद्धालु अतिशय आह्लादित थे। उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर उनका आंतरिक उल्लास थिरक रहा था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'आचार्यप्रवर का माधावरम, चेन्नई का चतुर्मास सानंद सम्पन्न हुआ। 'साधु तो रमता भला' इस अनुश्रुति के अनुसार परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कल माधावरम से प्रस्थान किया और रेडहिल्स पधारे। गुरुदेवश्री तुलसी ने मद्रास में पहला पड़ाव रेडहिल्स में किया था। वैसे तो आचार्यप्रवर का हर चतुर्मास उपलब्धिपूर्ण ही होता है, किन्तु चेन्नई चतुर्मास विशेष उपलब्धिपूर्ण रहा। ऐसी जानकारी मिली कि इस वर्ष जैन समाज में जितने जैनाचार्यों और साधुओं के चतुर्मास हुए हैं, उनमें सर्वश्रेष्ठ चतुर्मास परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का घोषित किया गया है।

आचार्यप्रवर जहां भी पधारते हैं, लोगों को एक विशेष आनंद की अनुभूति होती है। वह ऐसा आनंद होता है, जिसे मुख से बयां नहीं किया जा सकता। परम पूज्य आचार्यप्रवर का आगमन अम्बत्तूरवासियों के लिए एक विशेष अवसर है और बहुत से लोगों के जीवन का तो यह पहला मौका है तो इसे अपूर्व अवसर भी कहा जा सकता है। अम्बत्तूरवासी इस दुर्लभ अवसर का भरपूर लाभ उठाएं।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में ज्ञान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान के प्रति रुचि न हो और ज्ञान के महत्त्व को समझा न गया हो तो व्यक्ति अध्ययन में अपने अध्यवसाय का नियोजन नहीं भी कर सकता है। आदमी को ज्ञान विकास का प्रयास करना चाहिए। विद्या संस्थानों में ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। वहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास का भी प्रशिक्षण प्राप्त हो।

ज्ञानविहीन आचार और आचारविहीन ज्ञान दोनों अपूर्ण हैं। ज्ञान और आचार दोनों होते हैं तो आत्मा उत्थान की ओर अधिक आगे बढ़ जाती है। अज्ञान एक ऐसा आवरण है, जिसके कारण आदमी हित-अहित का बोध नहीं कर पाता। ज्ञान सम्यक् होना चाहिए। अध्यात्म के क्षेत्र में सम्यक्ज्ञान का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। सम्यक्ज्ञान के बिना आचार का इतना महत्त्व नहीं होता।'

पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्राप्त कर अम्बत्तूरवासियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

संसारपक्ष में अम्बत्तूर से संबंधित समणी शशिप्रज्ञाजी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। श्री आनंद समदड़िया, राकेश बैद, श्रीमती रेखा समदड़िया, खुशी बोहरा, उपासिका श्रीमती कांता सिंघवी और श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ के मंत्री श्री गौतम गादिया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। अम्बत्तूर तेरापंथ समाज की महिलाओं ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर का अभिनन्दन किया। ज्ञानाशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी।

आज रात्रि में वेल्लूर जिले के डेपुटी कलेक्टर श्री रमेश शेषाद्री आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए, किन्तु तब तक आचार्यप्रवर का रात्रि विश्राम का क्रम प्रारम्भ हो चुका था। उन्हें मुनिवृंद ने यात्रा के विषय में अवगति दी तो वे बोले--'हम भगवान को खोजते हैं, आचार्यजी सचमुच भगवान स्वरूप हैं।'

भक्तों के बीच आए भगवान

२६ नवम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः अम्बत्तूर से वानागरम की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में आचार्यप्रवर कुछ अतिरिक्त यात्रा स्वीकार कर समणी शशिप्रज्ञाजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थानों में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन हुए। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात समदड़िया परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। पूज्यप्रवर करीब ११.० किमी का विहार कर वानागरम में स्थित वेल्लामल हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। वानागरम और उसके परिपार्श्ववर्ती उपनगर--नेरकुण्ड्रम, मदुरावायल, वेल्लापनचावड़ी तथा तिरुवेरकाडु के श्रद्धालु भी पूज्यप्रवर का स्वागत कर प्रफुल्लित थे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'दानों में अभयदान श्रेष्ठ है। अन्नदान, वस्त्रदान, ज्ञानदान आदि भी महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं, किन्तु अभयदान जैसा कोई दान नहीं होता। छहकाय के जीवों को मारने का त्याग करना अभयदान होता है। साधु का धर्म है अभयदान देना। गृहस्थ भी प्राणियों को दुःख देने से यथासंभव बचने का प्रयास करे, यह काम्य है।

आदमी न डरे और न ही डराए। भय से व्यक्ति हिंसा और झूठ में प्रवृत्त हो सकता है। भय आदमी की दुर्बलता होती है। भय की स्थिति में 'ऊँ भिक्षु' आदि मंत्र का आलम्बन लिया जा सकता है। भय पर विजय पाने के लिए प्रेक्षाध्यान में अभय की अनुप्रेक्षा भी निर्दिष्ट की गई है। जो भय को पूर्णतया जीत लेता है, वह परम सुखी बन जाता है। भीतर में मैत्री का भाव पुष्ट होने से भय पर विजय पाने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।'

पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण करवाए। श्री महावीर बाफना, जैन कांफ्रेंस की युवा शाखा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अभिषेक दुगड़, श्री किशनलाल संचेती और बालक ऐश्वर्य बाफना ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने आस्थासिक्त भाव प्रस्तुत किए।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यप्रवर का अभिनन्दन किया। स्थानीय तेरापंथ समाज के कुछ सदस्यों ने गीत के द्वारा आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

चेन्नई की सीमा के इस पार पधारे पूज्यचरण

२७ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः वानागरम से चेतीपुडू की ओर प्रस्थित हुए। आज के विहार पथ पर यातायात अधिक था। इस कारण वातावरण में प्रदूषण भी छाया हुआ प्रतीत हो रहा था। पथ के आसपास विद्या संस्थानों और फैक्ट्रियों आदि की बहुलता यातायात के आधिक्य का कारण बताया गया। आज का विहार प्रलम्ब था और सूर्य प्रखरता के साथ आतप बरसा रहा था। यदा-कदा बादल उसे बाधित करने का प्रयास भी कर रहे थे। बादलों की छाया और सूर्य की ऊष्मा--दोनों महातपस्वी आचार्यप्रवर के समत्व को बाधित करने में असमर्थ ही सिद्ध हुए। मार्ग में अनेक व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट उनसे संबंधित लोगों को पूज्यप्रवर से मंगलपाठ श्रवण कर आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर आज विहार के दौरान चेन्नई की सीमा से बाहर पधारे। मार्ग में एक स्थान के निकट तेरापंथ एजुकेशनल एण्ड मेडिकल ट्रस्ट से संबंधित लोगों ने आचार्यप्रवर के सम्मुख अवगति प्रस्तुति की कि हमारे ट्रस्ट की एक जमीन यहां से समीप ही है। हमारी योजना है कि हम वहां एक बड़ा विद्या संस्थान बनाएं। आचार्यप्रवर ने कुछ क्षण विराजमान होकर मुख्य मार्ग से ही ट्रस्ट से संबंधित लोगों को मंगलपाठ सुनाया।

पूज्यप्रवर चेतीपुडू स्थित सविता इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर के निकट पधारे तो संस्थान के चेयरमैन डॉ. एन.एम. विरयन आदि ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। कॉलेज के शिक्षक और विद्यार्थी भी पूज्यप्रवर के स्वागत में कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। कई छात्राओं के हाथ में कलश सजे थे। कॉलेज परिसर में स्थान-स्थान पर आचार्यप्रवर के स्वागत में स्वागत द्वार और होर्डिंग लगे हुए थे। पूज्यप्रवर का आज का प्रवास इसी कॉलेज में हुआ। आज का विहार करीब १६.० किमी का रहा।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'दो प्रकार की विचारधाराएं हैं--आस्तिक और नास्तिक। आस्तिक विचारधारा के अनुसार शरीर के भीतर आत्मा नाम का तत्त्व रहता है। शरीर और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं। आत्मा को स्थायी माना गया है, उसका कभी नाश नहीं हो सकता। न उसे काटा जा सकता है, न उसे जलाया जा सकता है, न उसे भिगोया जा सकता और न ही उसे सुखाया जा सकता है। शरीर विनाशधर्मा है और अस्थायी है। आत्मा स्थायी है और वह संसारी अवस्था में एक जन्म

के बाद दूसरा जन्म भी ग्रहण करती है। इस प्रकार आस्तिक विचारधारा ने पुनर्जन्म को स्वीकार किया है।

आस्तिक विचारधारा के अनुसार आत्मा अपने कृतकर्मों का फल भोगती है। किसी व्यक्ति के कर्मों के फल को कोई दूसरा व्यक्ति नहीं भोग सकता, क्योंकि कर्म अपने कर्ता का अनुगमन करता है। आस्तिक विचारधारा ने यह भी बताया कि आत्मा साधना के द्वारा अपुनर्भव की स्थिति में अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर सकती है। मोक्ष पाने के बाद आत्मा का न जन्म होता है और न ही उसकी मृत्यु होती है। क्रोध, मान, माया और लोभ के कारण आत्मा एक जन्म के बाद दूसरा जन्म ग्रहण करती रहती है। नास्तिक विचारधारा के अनुसार पुनर्जन्म नहीं होता। परलोक के विषय में संदेह होने पर भी आदमी को सत्पथ पर चलना चाहिए। यदि परलोक है तो आदमी को उसका अच्छा फल मिल सकता है, यदि परलोक नहीं भी हो तो सत्पथ पर चलने से नुक्सान क्या हुआ? मेरा परामर्श है कि आदमी को नास्तिकवादी नहीं बनना चाहिए। नास्तिकवादी बनकर हिंसा, झूठ आदि में प्रवृत्त होना अच्छा नहीं होता। आदमी को आस्तिकवाद को सम्मुख रखकर अपनी जीवनशैली का निर्माण करना चाहिए।

जीवनशैली अच्छी रहे उसके लिए चार बाते हैं--नैतिकता, अहिंसा, संयम और साधना में समय नियोजन। इन चार बातों को आत्मसात कर व्यक्ति अपनी जीवनशैली को प्रशस्त बना सकता है।'

मुनि अनेकांतकुमारजी ने तमिल भाषा में अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देते हुए अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

सविताग्रुप के चेयरमैन डॉ. एन.एम. विरयन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'हमने सपने में भी नहीं सोचा था कि अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारे इंस्ट्यूशन ग्रुप के इस परिसर में पधारेंगे। गुरुजी! आज आपके आगमन से हमारा यह परिसर धन्य हो गया। आपकी इस कृपा को पाकर मैं इतना आह्लादित हूं कि मेरे पास आपकी कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए शब्द नहीं हैं। गुरुदेव! हम आपसे प्राप्त संकल्पों का दृढ़ता के साथ पालन करने का प्रयास करेंगे। एक बार पुनः आपश्री की कृपा के लिए आपके चरणों में कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।'

श्रीमती नुपूर सोलंकी एवं अनिता जैन ने गीत का संगान किया।

वश में रहे मन तो दुःख होगा नष्ट

२८ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः चेतिपुडु से श्रीपेरम्बुदूर की ओर प्रस्थित हुए। मृगिशिर माह में भी पूज्यप्रवर के इस विहार क्षेत्र में सूर्य आतप बरसाता हुआ राहगीरों को पसीने से नहला रहा था। यदा-कदा बादल उसे रोकने का प्रयास भी कर रहे थे। आचार्यप्रवर करीब ११.० किमी का विहार कर श्रीपेरम्बुदूर में पधारे। श्री विवेकानंद विद्यालय में आज का प्रवास हुआ। विद्या संस्थान के संचालक व शिक्षकों ने आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। करीब पचास वर्षों बाद अपने आराध्य को अपनी कर्मभूमि पर पाकर श्रीपेरम्बुदूर प्रवासी दो तेरापंथी परिवार हर्षविभोर बने हुए थे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है--मन। मन सुमन भी हो सकता है और वह दुर्मन भी बन सकता है। मन में कल्याणकारी स्फुरणा होती है, अच्छे विचार आते हैं तो मन सुमन बन जाता है और जब मन में अशुभ विचार आते हैं, तब वह दुर्मन बन जाता है। मन कल्याणकारी संकल्पों से युक्त रहना चाहिए।

आदमी मन ही मन परेशान, दुःखी भी बन सकता है और वह मन ही मन सुखी भी हो सकता है। मन प्रमत्त होता है तो दुःख बढ़ जाते हैं और मन वश में रहता है तो दुःख नष्ट हो जाते हैं। अनावश्यक विचार न चले, आदमी के लिए यह ध्यातव्य है। प्रेक्षाध्यान पद्धति में भावक्रिया की बात आती है। जिस समय जो क्रिया

की जा रही है, उस समय उसके अलावा सामान्यतया कहीं ध्यान न जाए, यह भावक्रिया होती है। दीर्घश्वास मन की एकाग्रता का एक साधन है। जप को भी श्वास के साथ जोड़ दिया जाए तो मन जप में एकाग्र रह सकता है।

अनपेक्षित स्मृति, अनपेक्षित विचार और अनपेक्षित कल्पना नहीं होनी चाहिए। अपेक्षित स्मृति, विचार और कल्पना में भी अशुभता नहीं रहनी चाहिए। मन की एकाग्रता के लिए शरीर की स्थिरता भी अपेक्षित होती है। तन स्थिर होता है तो मन की चंचलता को कम करने में सहायता मिल सकती है।'

पूज्यप्रवर ने समुपस्थित विद्यार्थियों को सत् शिक्षाएं प्रदान करते हुए महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। पूज्यप्रवर ने शिक्षकों, विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों को संकल्पत्रयी स्वीकार कराई।

विद्यालय के चेयरमैन श्री रामयरूमलै ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज हमारे विद्यालय में राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ। आपके दर्शन कर मैं धन्य हो गया और आपकी चरणरज से हमारा विद्यालय परिसर पवित्र हो गया। आज से पचास वर्ष पूर्व जब आचार्यश्री तुलसी यहां पधारे, तब मैं छोटा था। उस समय मैंने उनसे अणुव्रत के पांच नियमों को स्वीकार किया था और आज भी मैं उन संकल्पों का पालन करता हूं। आचार्यश्री! आपका संदेश और आपकी यह यात्रा देश और समाज का उत्थान करने वाली है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा सफल होगी और तमिलवासी भी इससे पूर्णतया लाभान्वित होंगे।'

स्थानीय जैन समाज की महिलाओं ने गीत का संगान किया। बालिका जिया सोलंकी, श्रीमती नुपूर सोलंकी, श्री आदर्श जैन, श्रीमती सुनीता सोलंकी और श्री धर्मचंद सोलंकी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित कथावाचक प्रेमा पाण्डुरंग ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'जो लोग ईश्वर और मानवता से दूर हो गए हैं, उन्हें वापस सन्मार्ग पर लाने के लिए आज आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे संतों की परम आवश्यकता है। संत अपने लिए नहीं आते। भटके हुए लोगों को सही रास्ते पर लाने के लिए ही संत चलते हैं और वही कार्य आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज कर रहे हैं। श्रीमद्भगवत गीता में वर्णित श्लोक को चरितार्थ करते हुए आचार्यश्री पैदल चलकर लोगों के कल्याण का कार्य कर रहे हैं। लोग तीर्थस्थलों पर जाते हैं, पवित्र नदियों में स्नान करते हैं तो कहते हैं कि उनका पाप धीरे-धीरे झड़ता है, पर आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे संतों के मुख दर्शन से ही सारे पाप कट जाते हैं। ऐसे संत तो अपना पुण्य भी हम सभी में बांट देते हैं और लोगों का जीवन बदल जाता है। मैं आपके चरणों में अपना प्रणाम अर्पित करती हूं और आपसे यह आशीर्वाद चाहती हूं कि मैं भी भगवद् वाणी का लोगों को श्रवण कराती जाऊं, इसके लिए मुझे आपश्री के आशीर्वाद की शक्ति चाहिए।'

राजीव गांधी स्मारक स्थल का अवलोकन कर तेरापंथ सरताज पधारे सुंगुवारछत्रम्

२६ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः श्रीपेरम्बुदूर से सुंगुवारछत्रम की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में श्रीपेरम्बुदूर के लोगों को अपने-अपने घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन करने और श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आचार्यप्रवर विहार के दौरान श्रीपेरम्बुदूर स्थित 'राजीव गांधी स्मारक स्थल' पर पधारे। बताया गया कि यह वही स्थान है, जहां २१ मई १९९१ के रात्रि करीब १०.२० बजे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या हुई थी। वे उन दिनों चुनाव प्रचार अभियान में संलग्न थे। इसी क्रम में वे श्रीपेरम्बुदूर आए थे। उन्हें इस मैदान में एक बालिका ने कविता की पंक्ति सुनने के लिए रोका। वे उसकी पंक्ति को सुनकर उसे धन्यवाद देते हुए आगे बढ़ने ही वाले थे कि एक महिला उनके सामने आकर झुकी, ऐसा लगा कि वह उनके पैर छूना

चाहती है, किन्तु वह महिला मानव बम थी। उसने अपने कपड़ों में छिपे बम का विस्फोट कर दिया। इस विस्फोट में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी काल कवलित हो गए। विस्फोट स्थल पर एक चट्टान पर राजीव गांधी का चित्र उकेरा हुआ है। आचार्यप्रवर वहां कुछ क्षण रुककर स्मारक स्थल से बाहर पधार गए।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से सुंगुवारछत्रम के श्रद्धालुओं का उल्लास चरम पर था। अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के लोग भी आचार्यप्रवर का स्वागत कर आनंद की अनुभूति कर रहे थे। स्थानीय लायंस क्लब के सदस्यों ने भी पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

करीब ११.७ किमी का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर सुंगुवारछत्रम में स्थित श्री संतोष संचेती परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य का एक दिवसीय प्रवास अपने आंगन में पाकर संचेती परिवार हर्षाभिभूत बना हुआ था।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में समय मानों अभिन्नता के साथ जुड़ा हुआ है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव--ये चार दृष्टियां होती हैं। समय है तो व्यक्ति कार्य कर पाता है। समय बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। आदमी को समय के साथ यथोचित रूप में आगे बढ़ना चाहिए। जो समय बीत जाता है, वह लौटकर नहीं आता। जो व्यक्ति उसका सदुपयोग करता है, वह सफलता को प्राप्त कर सकता है।

समय तो बादलों की तरह सबके लिए होता है। यह तो व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह उसका क्या उपयोग करता है। पानी पीने के भी काम आ सकता है और उसे नाली में व्यर्थ बहाया भी जा सकता है। जो व्यक्ति समय का अच्छा उपयोग करता है, वह अच्छा व्यक्ति होता है और जो समय का दुरुपयोग करता है, वह अच्छा इंसान नहीं होता। आदमी को समय का दुरुपयोग तो करना ही नहीं चाहिए, अनुपयोग भी क्यों हो। इसलिए उसे समय का सदुपयोग करने का प्रयत्न करना चाहिए। आदमी स्वयं को अच्छे कार्य में उपयोगी बनाए यह काम्य है।'

व्यस्त होना एक बात है, अस्त-व्यस्त होना अलग बात है। आदमी को अस्त-व्यस्त नहीं होना चाहिए। मस्तिष्क में जब कार्य का तनाव हो जाता है, तब वह अस्त-व्यस्त बन सकता है। अस्त-व्यस्त होने से बचने के लिए अपेक्षित है कि जीवन में साधना हो और समय का प्रबन्धन अच्छा हो। समय का व्यवस्थित नियोजन किया जाए तो कार्य अच्छा हो सकता है और मस्तिष्क अस्त-व्यस्त होने से भी बच सकता है। समय एक धन है, इसलिए सोच-विचार कर समय का नियोजन करना चाहिए। व्यर्थ कार्यों में उसे गंवाना नहीं चाहिए।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से स्थानीय जनता ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

राजस्थान सरकार के अंतर्गत राजस्थान संस्कृत एकेडमी की मंत्री डॉ. दया दवे कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुईं। उन्होंने बताया कि वे लम्बे समय से तेरापंथ धर्मसंघ के सम्पर्क में हैं तथा प्रेक्षाध्यान का निरंतर अभ्यास करती हैं। प्रेक्षाध्यान से उन्हें काफी लाभ प्राप्त हुआ है।

श्रीमती स्वीटी संचेती ने २८ दिन की तपस्या के प्रत्याख्यान के द्वारा पूज्यप्रवर का अभिनन्दन किया। श्रीमती रंजना संचेती, श्री महेन्द्र संचेती, श्री गुरुनाथन, श्री मगराज धोका तथा श्री के. सुरेश मूथा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

सुंगुवारछत्रम के तेरापंथ समाज की महिलाओं ने गीत का संगान किया तथा कन्याओं ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। संचेती परिवार के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी।

आज लायंस के ३२४ ए-३ के डिस्ट्रिक गवर्नर श्री गुरुनाथन ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

योग से होता है आत्मा का पोषण

30 uoEcjA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः सुंगुवारछत्रम से कीलचैरी की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान सुंगुवारछत्रम के कई लोगों ने अपने-अपने घरों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ सुना। स्थानीय पूर्व विधायक श्री पेरामल ने अपने घर के बाहर आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने पूज्यप्रवर से अपने घर में पधारने की प्रार्थना की तो आचार्यप्रवर ने उन्हें बाहर से ही मंगलपाठ सुनाया।

पूज्यप्रवर ने मार्ग में तिरुवल्लूर जिले में प्रवेश किया। मार्गवर्ती सोगण्डी गांव के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। सोगण्डी के एक अक्षम ग्रामीण ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उसे मंगल आशीष और शराब न पीने की प्रेरणा प्रदान की। पन्नूर गांव के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। पन्नूर में स्थित डॉन बोस्को हायर सेकेण्ड्री स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने विद्यालय के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए शराब से मुक्त रहने की प्रेरणा दी। आज के विहार पथ के आसपास इमली के वृक्ष भी अवस्थिति लिए हुए थे। कुछ वृक्षों पर लदी हुई इमलियां पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बनीं। आचार्यप्रवर विहार पथ के निकटस्थ मुनि धर्मेशकुमारजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के फार्म हाउस के भीतर पधारने के लिए उसके निकट पधारे, किन्तु मार्गस्थ काई के कारण उसके भीतर नहीं पधार पाए। किलचैरी प्रवासी जैन समाज व सिरवी समाज से जुड़े लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर करीब १७.४ किमी का विहार कर किलचैरी में स्थित क्राइस्ट कॉलेज में पधारे। कॉलेज के फादर अन्दोनी सबस्टियन आदि ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में श्रावक के तीन मनोरथों की चर्चा करते हुए पापों से बचने और धर्म का टिफिन तैयार करने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'जीवन की समाप्ति अनशन की स्थिति में होना बहुत अच्छी बात होती है। आदमी खाते-खाते, रोते-रोते न जाए और अच्छा तो यह हो कि हॉस्पिटल में उपचार करवाते हुए भी प्राण न छूटे। खूब धर्म-ध्यान की साधना करते हुए, नमस्कार महामंत्र आदि सुनते-सुनते प्राण छूटे, यह अच्छी स्थिति होती है। हॉस्पिटल का माहौल अलग होता है और अनशन का माहौल अलग होता है। जब यह लगे कि अब मृत्यु सन्निकट है, तब हॉस्पिटल से छुट्टी लेकर धर्म-ध्यान की साधना में लगना अच्छा होता है। परिवार का सांसारिक कर्त्तव्य हो सकता है अपने स्वजन को बचाने का प्रयास करना, किन्तु जब यह लगे कि अब उपचार नहीं हो सकता, तब उस व्यक्ति को खूब आध्यात्मिक सहयोग देने का प्रयास करना चाहिए, ताकि उसके परिणाम शुद्ध रहें। जैन शासन में जो अनशन की बात है, वह जीवन यात्रा को अच्छे तरीके से सम्पन्न करने की बात है। भोग शरीर को और योग आत्मा को पोषण देने वाला होता है। जीवन के अंतिम समय में योग को ही प्राधान्य देना चाहिए।'

मित, यथार्थ और मिष्ट हो वाणी

१ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः किलचैरी से पेरम्बाकम की ओर प्रस्थान किया। मेवाड़ निवासी और किलचैरी प्रवासी एक जैनेतर परिवार ने अपने व्यवसायिक प्रतिष्ठान के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। सिरवी समाज के घर और दुकान के निकट उनसे संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया। आसमान में बादलों की उपस्थिति के कारण मौसम सुहावना रूप धारण किए हुए था। कहीं-कहीं जहां वृक्षों की सघन छाया थी, वहां लटों की मानों भरमार थी।

इस कारण ईर्या समिति पूर्वक गतिमान आचार्यप्रवर की गति काफी मंद बन गई। आचार्यप्रवर और मुनिवृंद द्वारा उच्चरित 'लट है' का बुलंद स्वर अन्य लोगों को भी सजग और उत्प्रेरित कर रहा था।

अपने आराध्य को अपने गांव में पाकर पेरम्बाकम् प्रवासी एकमात्र तेरापंथी परिवार अतिशय प्रसन्नता की अनुभूति कर रहा था। स्थानीय अन्य जैन समाज और जैनेतर समाज में भी पूज्यप्रवर के पदार्पण से हर्ष का वातावरण था। लायंस क्लब के सदस्य कलश, नारियल, फल-फूल आदि सजाकर आचार्यप्रवर के स्वागत में खड़े थे। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यप्रवर करीब सात किमी का विहार कर गर्ल्स हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का आज का प्रवास यहीं हो रहा था तथा आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम भी यहीं समायोज्य था। पूज्यप्रवर का आज का प्रातराश भी यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में एक कथानक सुनाकर कहा--'वाणी के विषय में कुछ बातें ध्यातव्य हैं--

१. मितभाषिता--आदमी को अनावश्यक नहीं बोलना चाहिए। अनावश्यक मौखर्य आदमी को छोटा बनाता है। मौन का प्रयोग किया जाता है, वह भी अच्छा अनुष्ठान है, किन्तु उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात है अनावश्यक नहीं बोलना। मितभाषिता जीवन में आ जाती है तो व्यक्ति की वाणी कलापूर्ण बन जाती है।

२. यथार्थभाषिता--आदमी को झूठ से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। झूठ बोलने वाले का विश्वास समाप्त हो सकता है। सच्चाई के पथ पर चलने से कठिनाई आ सकती है, किन्तु उसकी मंजिल अच्छी होती है।

३. मिष्टभाषिता--कठोर वचन छोड़कर मीठे शब्दों का प्रयोग करना मानों वशीकरण मंत्र है। गुस्से में आकर किसी को कटु वचन बोलना, गाली बोलना, किसी की पिटाई करना आदि गुस्से के फल हैं। आदमी को गुस्से के फल नहीं लगने देना चाहिए। मन में मैत्री भाव रहे और विवेक के साथ वाणी का प्रयोग हो तो वाणी में मधुरता आ सकती है।'

पूज्यप्रवर ने समुपस्थित जनता को अहिंसा यात्रा के संकल्प करवाए।

श्रीमती गुणवन्ती दुगड़, श्री सुनील दुगड़, श्री संदीप दुगड़, श्री महावीर दुगड़, बालक लक्ष्य दुगड़ और बालिका लहर दुगड़ तथा श्री लालचंद बम्ब ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। दुगड़ परिवार के सदस्यों ने गीत के द्वारा अपने आराध्य का अभिनन्दन किया।

दुगड़ परिवार के सदस्यों ने पूज्यप्रवर से परिवार का कोई सदस्य दीक्षा लेने को तैयार हो तो उसे मना करने का त्याग किया तो आचार्यप्रवर ने फरमाया--'मना तो करना ही नहीं चाहिए, साथ में सुबह-सुबह यह भावना भी भानी चाहिए कि परिवार से कोई दीक्षा के लिए तैयार हो।'

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के उपरान्त करीब तीन सौ मीटर की दूरी तय कर आचार्यप्रवर पेरम्बाकम के एकमात्र तेरापंथी श्री महावीर दुगड़ परिवार के निवास स्थान पर पधारे। पूज्यप्रवर का आज का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर दुगड़ परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

तृप्त हुए तक्कोलमवासी

२ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः पेरम्बाकम से तक्कोलम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में कुछ लोगों ने अपने-अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया। आचार्यप्रवर आज के विहार को करीब १.२ कम बनाने वाले नदी के पथ से पधारे। नदी वर्तमान में सूखी हुई थी। रविवार के कारण चेन्नई व तमिलनाडु के अन्य क्षेत्रों के श्रद्धालु भी आज अच्छी संख्या में

उपस्थित थे। विहार के दौरान बादलों और सूर्य के बीच 'आंख-मिचौनी' का खेल-सा चल रहा था। कभी बादल सूरज को आच्छादित कर रहे थे तो कभी सूर्य उन्हें चीरकर प्रखर आतप बरसा रहा था।

मार्गवर्ती मारिमंगलम् के ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। कई भक्तिमान लोगों ने पूज्यप्रवर को साष्टांग वंदन भी किया। मार्ग के परिपार्श्ववर्ती खेतों में चावल की फसल परिपक्वता के निकट पहुंचती-सी दिखाई दे रही थी। बताया गया कि मकर संक्रांति के आसपास इस फसल की कटाई की जाती है। कुछ किसान नई खेती के लिए तैयारी करते हुए दृष्टिगोचर हो रहे थे।

करीब आधी सदी बाद अपने आराध्य का अपने क्षेत्र में पदार्पण तक्कोलम के दो तेरापंथी परिवारों के लिए किसी उत्सव से कम नहीं था। उनका उल्लास मानों आज चरम पर था। स्थानीय अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के लोग भी पूज्यप्रवर के पदार्पण से उल्लसित बने हुए थे।

सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटि फोर्स के करीब सौ से अधिक प्रशिक्षु फोर्स कमांडेंट श्री विनय काजला के नेतृत्व में मार्ग के दोनों ओर कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जा रहे थे, वे लोग स्वागत जुलूस में संभागी बनते जा रहे थे। पूज्यप्रवर करीब १०.२ किमी का विहार कर श्री प्रकाश बाफणा परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह में अभिस्नात बाफणा परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के लिए परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रवास स्थल से करीब तीन सौ मीटर दूरी पर स्थित गवर्नमेंट गर्ल्स हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे और मंचासीन हुए। कांचीपुरम् काम कोटि पीठ के शंकराचार्यश्री विजयेंद्र सरस्वती की ओर से काम कोटि पीठ के मैनेजर श्री सुन्दरेसन आदि पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने बताया कि शंकराचार्यजी की भी आपसे मिलने की बहुत इच्छा है, किन्तु आप जब कांचीपुरम् पधारेंगे, तब वे पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार विदेश यात्रा पर रहेंगे, इसलिए मिलना संभव नहीं हो पाएगा। उन्होंने हमारे माध्यम से अपनी मंगल भावनाएं प्रेषित की हैं। श्री सुन्दरेसन ने शंकराचार्यजी की ओर से माला, उत्तरीय आदि सामग्री पूज्यप्रवर को समर्पित करनी चाही, किन्तु आचार्यप्रवर ने केवल उनकी मंगल भावनाओं को ही ग्रहण किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'भगवान महावीर ने आज के दिन अर्थात् मृगशिर कृष्णा दसमी को सांसारिक जीवन का त्याग किया था। आज उनका दीक्षा दिवस है। हमारी आत्मा अनादि काल से संसार में भ्रमण कर रही है। भगवान महावीर की आत्मा ने भी अनंत-अनंत काल तक संसार में भ्रमण किया। महावीर के रूप में उन्होंने साधना की। दीक्षा के बाद करीब साढ़े बारह वर्षों तक तप तपा, विशिष्ट साधना की और केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। उन्होंने पिछले जन्मों में भी लम्बे समय तक साधना की थी। सारी साधना की निष्पत्ति इस वर्धमान महावीर के जन्म में आई और उन्होंने कैवल्य को प्राप्त कर लिया।

भगवान महावीर ने संयम की साधना की थी, तपः आराधना की थी। संयम के बिना आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता। संयम जीवन को स्वीकार करने का लक्ष्य होना चाहिए-- सर्वदुःखमुक्ति। साधु सर्वविरति संयम का साधक होता है। हर व्यक्ति साधु नहीं बन सकता तो कुछ अंशों में भी संयम की साधना कर सकता है। परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत की बात बताया करते थे। अणु अर्थात् छोटा और व्रत अर्थात् नियम। छोटे-छोटे नियम भी जीवन में आते हैं तो आदमी का जीवन उन्नत बनता है। त्याग से शांति मिलती है। जहां त्याग नहीं, संयम नहीं, वहां कठिनाइयां पैदा हो सकती हैं।

भगवान महावीर ने अपने साधनाकाल में अनाहार की लम्बी-लम्बी साधना की थी। अपने लगभग साढ़े बारह वर्षों के साधनाकाल में उन्होंने प्रतिदिन निरंतर आहार नहीं किया। साधनाकाल में वे ज्यादा दिन तो तपस्या में ही रहे। उनके आहार के दिन बहुत ही कम रहे। कितने-कितने उपसर्ग उनके सामने आए। उन्होंने किस

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

प्रकार सहन किया। प्रतिकूलता और अनुकूलता दोनों स्थितियों में वे संतुलित रहे। उनकी बहुत ऊंची कोटि की साधना थी। आदमी आज के दिन से प्रेरणा प्राप्त कर अपनी जीवनशैली को संयम प्रधान अथवा संयम से युक्त बनाने की प्रेरणा प्राप्त करे।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने समुपस्थित जनमेदिनी को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए।

सी.आई.एस.एफ. के कमांडेंट श्री विनय काजला ने श्रद्धासिक्त भावों से आचार्यप्रवर का भावभीना अभिनन्दन किया।

श्री प्रताप बाफना, सुश्री ईशिका तातेड़, श्री विमल बाफना, श्री संभव बाफना, श्री ताराचंद तातेड़, स्थानकवासी समाज की ओर से श्री भुवन खिंवेसरा और श्री दलीचंद कोठारी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। बाफना परिवार की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया।

नगर पंचायत के चेयरमैन श्री नागराजन ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों का स्पर्श पाकर आज हमारा तक्कोलम नगर धन्य हो गया। ऐसी पुण्यात्मा का हमारी धरती पर आना ही हम सबके लिए परम सौभाग्य की बात है। आपके चरणस्पर्श मात्र से ही तक्कोलम में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होने लगा है। मैंने आज आचार्यश्री से जो संकल्प स्वीकार किए हैं, उनका मैं जीवन भर दृढ़ता के साथ पालन करूंगा और मांसाहार को भी धीरे-धीरे छोड़ने का पूरा प्रयास करूंगा। मैं तक्कोलम नगर की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी का बारम्बार अभिनन्दन और स्वागत करता हूं।'

कार्यक्रम के दौरान सी.आई.एस.एफ. के डिप्टी कमांडेंट श्री राजेन्द्र सिंह, फोर्स के सौ से अधिक प्रशिक्षु तथा बड़ी संख्या में स्थानीय ग्रामीण भी उपस्थित रहे।

सुधारकर पढ़ें

- अंक ३३ के पृष्ठ बारह की प्रथम और द्वितीय पंक्ति इस प्रकार पढ़ी जाए--'गुवाहाटी में समणी भावितप्रज्ञाजी के सान्निध्य में श्रीमती धन्नीदेवी चोपड़ा तथा श्री माणकचन्द बोरड़ ने मासखमण की तपस्या की है।'
- अंक ३४ के पृष्ठ ८ पर प्रकाशित नवदीक्षित साधु-साध्वियों के नामकरण संस्कार के अंतर्गत 'मुमुक्षु शुभम् आच्छा (बड़ाखेड़ा-चेन्नई)-- मुनि शुभमकुमारजी' पढ़ा जाए।
- अंक ३५ के पृष्ठ बारह पर प्रकाशित 'गुरुकुलवासी चारित्रात्माओं द्वारा एकान्तर तप' शीर्षक के अंतर्गत 'मुनि कोमलकुमारजी-- चार माह एकान्तर (वर्षीतप के अंतर्गत)' भी पढ़ा जाए।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६ नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- ११०००२ से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला